पेरिस
अगस्त २७, २००६

सन्देश संख्या १०३

मानवता का भविष्य

बीसवीं शताब्दी विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में विस्फोट का साक्षी है । लगभग नब्बे प्रतिशत वैज्ञानिक इसी सदी के हैं । जबकि मुश्किल से दस प्रतिशत इसके पहले के होंगे । यदि हम यह कहें कि वैज्ञानिक विचारधारा और तकनीकी निपुणता दस हजार वर्ष पहले प्रारम्भ हुई तो उस समय से उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक शायद केवल दस प्रतिशत वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ ही पैदा हुए जबकि शेष नब्बे प्रतिशत बीसवीं शताब्दी में पैदा हुए । सच में मानव जाति में यह एक प्रस्फुटन है । लेकिन मानवीय चित्तवृत्ति की विभेदकारी एवं विभाजनकारी प्रक्रियाओं के निरन्तर बने रहने के कारण दानवी प्रवृत्ति वाले पुरोहितों का एक वर्ग उत्पन्न हुआ जिन्होंने धर्म एवं धर्मशास्त्रों के नाम पर जादू–टोना और गड़बड़ी उत्पन्न की और साथ ही साथ घृणित अपराधों में लिप्त राजनीतिज्ञों के एक वर्ग का उदय हुआ जो धूर्ततापूर्ण 'सुधारों' एवं 'क्रांतियों' के नाम पर युद्ध एवं द्वन्द्व उत्पन्न करता रहा। अब यदि इन पुरोहितों द्वारा फैलाये गए संकुचित धर्म की विकृतियों और राजनीतिज्ञों द्वारा प्रचारित क्षुद्र राष्ट्रवाद का विष सम्पूर्ण मनुष्यता को नाभिकीय संहार द्वारा सामूहिक आत्महत्या में न धकेले तो मानवता के द्वार पर पहले से ही एक प्रचण्ड संभावना दस्तक दे रही है ।

शायद पृथ्वी पर पैदा होने वाले स्वामी और रहस्यवादी, सूफी और संत, ऋषि और मुनि, कृष्ण और कबीर, बुद्ध और यीशु, लाहिड़ी और लाओत्से, नानक और नयनार, मुहम्मद और मंसूर, मैत्रेय और मूसा, अब्राहम और अवधूत इत्यादि में से केवल दस प्रतिशत ही बीसवीं शताब्दी के अंत तक उत्पन्न हुए हैं और हो सकता है कि उनमें से शेष नब्बे प्रतिशत मानवीय चित्तवृत्ति में मूलभूत रूपान्तरण के कारण इक्कीसवीं सदी में उत्पन्न हों । इस मूलभूत रूपान्तरण से मानवीय चित्तवृत्ति का स्नायविक दोष समाप्त हो जाएगा जो द्वैत और विभाजन उत्पन्न करता है तथा भगवत्ता की सत्यता तथा उसकी विस्मयकारी विविधता एवं सर्जनात्मकता का स्पर्श नहीं होने देता ।

पुरोहित और राजनीतिज्ञ तुष्टीकरण के साधन के रूप में अपने 'भगवानों' का प्रचार–प्रसार कर इस सम्भावना में बाधा उत्पन्न करते हैं । पवित्र अवधारणाओं की आड़ में तथा बड़ी–बड़ी बातें बताकर उनके द्वारा किया गया धनसंचय तथा महिमामण्डन और कुछ नहीं बल्कि भय, उत्तेजना और दुःख का द्योतक है । और वे दूसरों को वही देते हैं जो उनके पास है । अपनी संस्थाओं एवं संगठनों द्वारा धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सुधारों का नारा देकर वे केवल दुःख एवं शोक, भय एवं कुंठा, आत्म–दया एवं आत्म–घृणा, अपराधबोध एवं अपराधबोध ग्रस्तता बाँटते हैं । ये तथाकथित वी.आई.पी. लोग कभी भी अपने विवेक की आवाज नहीं सुनते । वे अपने लोग, मद, मात्सर्य, मान्यता, विभ्रान्त प्रयासों, विरोधाभासों तथा आडम्बरों, धर्मान्धता एवं युद्ध की विकृत प्रक्रियाओं की गहरी निद्रा में पौराणिक राक्षस कुम्भकरण की तरह सो रहे हैं ।

लेकिन जन–सामान्य ने पहले ही सुनना शुरू कर दिया है । उनमें विस्फोट हो रहा है तथा वे चित्तवृत्ति में हुए विखण्डन के बंधन एवं बोझ से मुक्त हो रहे हैं । पर्वत–प्रवचनों तथा आध्यात्मिक एवं राजनीतिक महा–मण्डियों की निरर्थक बातों से उनका मोह भंग हो रहा है । उनमें चित्तवृत्ति के उपादान उस ''मैं'' नामक भ्रामक विखण्डन को उत्पन्न नहीं करते जो चित्तवृत्ति के शेष उपादानों को नियन्त्रित करता है और विखण्डित चित्तवृत्ति में और भी भ्रांति उत्पन्न करता है। इस तरह, जिस चैतन्य से शरीर युक्त है, उसकी जागृति हो रही है । उषा का उदय हो रहा है तथा शरीरी चित्तवृत्ति के विखण्डनों, विचारों, छवियों, अवधारणाओं, द्वन्द्वों, विपरीतों, अज्ञानता, विभाजनों, भय, भ्रांति एवं घृणित लोभ का अन्धकार दूर हो रहा है और मुक्ति उपलब्ध हो रही है । इस मुक्ति से कई बुद्ध और कृष्णमूर्त्ति जैसे जाग्रत मानव उत्पन्न होंगे और नब्बे प्रतिशत जाग्रत मानव इक्कीसवीं सदी को ठीक उसी प्रकार से भर सकते हैं जिस तरह बीसवीं सदी में नब्बे प्रतिशत वैज्ञानिक उत्पन्न हुए थे । और तब यह पृथ्वी स्वर्ग बन सकती है । जाग्रत एवं मुक्त लोगों में से अधिकांश उन लोगों से प्रभावित और शोषित नहीं होंगे जो सत्तासीन, शक्तिशाली और प्रभावशाली बने हुए हैं । वैज्ञानिकों ने मानव जीवन–शैली में परिमाणात्मक परिवर्तन लाया है । जाग्रत लोग चित्तवृत्ति में विखण्डनरहित मुक्ति की अवस्था द्वारा गुणात्मक परिवर्तन लायेंगे अर्थात् तब विभेदकारी चित्तवृत्ति जलकर जागृति की विभूति (भस्म) बन जायेगी । इसीलिए परम मन्त्र है–''त्र्यम्बकं यजामहे'' । चैतन्य के उदय के लिए अर्थात् अमरत्व के होने के लिए विचारों का जलकर भस्मीभूत होना आवश्यक है । विचारों के कवच में ही ''मैं'' सुरक्षित रहता है अन्यथा इसका और कहीं भी अस्तित्व नहीं होता । ''मैं'' का अन्त होगा ही, पर किसी निर्णय या अनुशासन द्वारा नहीं । यह निष्क्रिय सजगता की ज्वाला में ही जलता है न कि वर्धित अहंकार के विखण्डन में ।

।। इक्कीसवीं शताब्दी की जय ।।